अभिनन्दन प्रसाद 2
हिन्दी विभाग

प्रश्न- कामायनी की श्रद्धा का चरित्र चित्रण कीजिए।

कामायनी महाकाव्य की नायिका श्रद्धा है। इस महाकाव्य का नामकरण भी उसी के नाम पर किया गया है। महाकाव्य की सभी प्रमुख घटनाएँ तथा कार्य-कलाप श्रद्धा के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही घटित होते हैं। एक तरह से सभी घटनाओं के मूल में वही स्थित है। कहा जा सकता है कि प्रसाद जी ने श्रद्धा के चरित्र को गरिमामय और आदर्शों से परिपूर्ण बनाया है। उसमें स्नेह, ममता, करुणा और विश्वास का अजस्र स्रोत बहता है तथा वह अलौकिक सौन्दर्य की प्रतिमा है। नारी के रूप में श्रद्धा भौतिक जीवन की एकांगिता से असन्तुष्ट होती हुई भी [illegible] और में वह मनु का तिरस्कार भी करती है।

ऋग्वेद में श्रद्धा को कामगोत्र की बालिका माना गया है — 'कामगोत्रजा श्रद्धा नामर्षिका'। कामगोत्रजा होने के कारण ही उसे कामायनी भी कहा जाता है। श्रद्धा का चरित्र आरम्भ से अन्त में एक निरन्तर विकास लिए हुए है। वह केवल मनु की पत्नी ही नहीं बल्कि सृष्टि के विकास का मूल आधार भी रही है। सृष्टि के विकास के लिए मानवता का पुनर्जन्म के लिए वही मनु को कर्मपथ की ओर प्रेरित करती है। वह मनु को सृष्टि और जीवन का रहस्य समझाती है और कहती है कि तप ही जीवन है। भोगवाद तथा आनन्द ही जीवन का उद्देश्य है।

जब मनु यज्ञ के बहाने हिंसक प्रवृत्ति की ओर आकृष्ट होता है तब वह मनु को हिंसा करने से रोकती है। वह मनु को उन्नत आदर्शों की ओर ले जाने का प्रयत्न करती है। परन्तु मनु अपनी स्वार्थ सीमाओं के कारण श्रद्धा की बातों में कोई रुचि नहीं लेता है। वह धीरे-धीरे आत्मकेन्द्रित होता चला जाता है। यहाँ तक कि श्रद्धा के गर्भवती

परख कर उसे छोड़कर चला जाता है। किंतु श्रद्धा ऐसी आदर्श नारी है कि वह मनु की निष्ठुरता का भी प्रतिरोध नहीं करती। उसे मनु पर क्रोध भी नहीं आता, वह मनु को उपालंभ भी नहीं देती बल्कि प्रेम में प्रतिदान की भावना को स्वीकार करती है। वह कहती है कि प्रतिदान में ही विजय है। प्रकृति का यही व्यापार है। वास्तव में श्रद्धा के रूप चित्रण में प्रसाद जी के व्यक्तित्व की छाप भी दृष्टिगोचर होती है। डा० भगीरथ मिश्र ने ठीक ही कहा है —" इसे हम प्रसाद के जीवनानुभव और चिन्तन की विशेष उपलब्धियों का सप्राण बिम्ब भी कह सकते हैं। प्रेम की शालीनता वेदनानुभूति की विराटता, आशा एवं विश्व मंगल की व्यापक कामना, जीवन के प्रति अटूट निष्ठा, सहिष्णुता, त्याग, अदम्य उत्साह, कर्तव्य परायणता तथा सरल हृदय की उच्चाशयता आदि गुणों का प्रतिफलन है।

श्रद्धा एक आदर्श पत्नी है। किंतु पति का वियोग बर्दाश्त नहीं कर पाती। मुरझाकर भी [illegible] हो जाती है। जब वह स्वप्न में मनु को इड़ा की ओर झुका देखती है तब उसका पतिव्रत धर्म जाग उठता है। और वह शिथिल शरीर लिए अंधकारपूर्ण रात्रि में घायल मनु की सेवा करने निकल पड़ती है। क्योंकि मनु वहां अनाचार के देव प्रकोप एवं जनरोष का शिकार होता है। वहाँ श्रद्धा उसे सांत्वना देती है, निःस्वार्थ सेवा करती है और पति धर्म का पालन करती है।

श्रद्धा बहुमुखी प्रतिभा की स्वामिनी है। एक तरफ उसके हृदय में अजस्र करुणा की धारा बहती रहती है तो दूसरी ओर वह लोगों की सेवा में अपना तन-मन अर्पित कर देती है। जैसे दूसरों की भलाई करना ही उसके जीवन का उद्देश्य है। विषाद में लीन

मनु को वह जीवन का संदेश देती है। वह मनु से कहती है — जिस जीवन को तुम अभिशाप समझते हो, वह तो जीवन का वरदान है। मनु को कर्म का संदेश देकर वह समरसता की बात करती है —

एक तुम यह विस्तृत भूखण्ड
प्रकृति के वैभव से भरा अमंद
कर्मभोग, भोग का कर्म
यही जड़-चेतन का आनंद।

श्रद्धा की करुणा तथा कल्याण की भावना केवल परिवार तक सीमित नहीं है, वह सम्पूर्ण विश्व की आनंद-प्राप्ति के लिए जगती है। इसकी करुणा निरीह पशुओं, पशु-पक्षियों तक भी प्रवाहित है। इसलिए मनु द्वारा पशुओं की हत्या का वह विरोध करती है।

श्रद्धा की दृष्टि अत्यन्त व्यापक है। मनु के प्रेम में वह विह्वला नारी नहीं है। वह एक आदर्श गृहिणी है जो मनु के विछोह को अपना भी वरदान स्वीकार नहीं करती। वह रोती, कलपती नहीं है बल्कि तत्कालीन अवस्था में आने वाले मानव के लिए एक नया रास्ता देती है। वह एक सुंदर कुटी का निर्माण करती है, तकली कातकर ऊन की पट्टियाँ बनाती है। श्रद्धा के इस विधान पर मनु स्वयं चकित है।

भारतीय नारी की प्रतीक मातृत्व है, श्रद्धा यह जानती है। नारी बिन्दु सागर को यह अर्पित किया है। वह अपनी आत्मज्ञान भावना का प्रसार मानव जाति तक कर देती है। इसके अतिरिक्त गुणों से विभूषित होने के साथ ही वह शारीरिक सौन्दर्य में भी अद्वितीय है। उसके रूप-राशि मनु को देखते ही अभिभूत होते हैं। उसके स्वर में कोकिला का मधुर संगीत है। वह विश्व मन— मानवता है। श्रद्धा ने तो सभी जीवों को श्रद्धा के हृदय में देखना है। मनुष्य जाति ने इन्हीं दृष्टि को स्वीकार कर लिया है। उसके प्रयास से ही मनु श्रद्धा का भक्त बन जाता है।

इस प्रकार श्रद्धा के चरित्र में त्यागशीलता है, उसमें मृदुल कोमलता भी है, करुणा की भावना है, वह सर्वगुण संपन्न एक आदर्श भारतीय नारी है। इसमें शील, क्षमा, सौन्दर्य और ममता के सभी गुण विद्यमान हैं।

PG. Semester-II
CC-10

e Shraddha ka charitra